टिकाऊ विकास हेतु

दिशा

प्रशिक्षकों हेतु पुस्तिका

जहाँ है हरियाली ।
वहाँ है खुशहाली ।।
भारत सरकार
पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन,
एप्को, मध्यप्रदेश

CEE
Centre for Environment Education

एन.जी.सी. कार्यक्रम के अंतर्गत् एप्को, मध्यप्रदेश राज्य के लिए *पुनःमुद्रित*

आभार

हिन्दी संस्करण

संयोजन एवं सम्पादनः प्रीति आर. कनौजिया

लेखनः प्रीति आर. कनौजिया, नीरज कुमार पाल, आशुतोष कुमार द्विवेदी

सहयोगः पूर्णेश त्रिपाठी, श्रुति श्रीवास्तव, ज्ञानेन्द्र कुमार दीक्षित

अंग्रेजी संस्करण

अवधारणा एवं विकासः ममता पंड्या, माधवी जोशी, राजेश्वरी नामगिरी

डिजाइन एवं ले–आउटः पंकज गौराना

चित्रांकनः मुकेश बारड़, शैलेश भलानी, विजय श्रीमाली, हेमल सोलंकी, डी. एम. थुम्बर, मुकेश पंचाल

कवर डिजाइनः पंकज गौराना

सहयोगः जे. के. नायर

मानव संसाधन विकास मंत्रालय से संबद्ध, यूनेस्को के सहयोग से स्थापित भारतीय आयोग द्वारा समर्थित यह प्रकाशन मुख्यतः डी.ई.एस.डी. इंडिया प्रोग्राम के तहत, राष्ट्रीय बाल भवन के लिए विकसित किया गया।

सी.ई.ई. एवं राष्ट्रीय बाल भवन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला के दौरान इस पुस्तिका की रूपरेखा का निर्माण हुआ। इस कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों के नाम हैंः आशा भट्टाचार्जी, आशीष भट्टाचार्जी, अश्वनी भट्ट, इन्द्रानी चौधरी, परमिन्दर बसु चौधरी, कैप्टन एच. एल. धवन, शरद गौड़, पंकज गोराना, संजय जैन, माधवी जोशी, अरजिन्दर कौर, राजेश्वरी नामगिरी, ममता पंड्या, शोभना राजदान।

© 2009 पर्यावरण शिक्षण केन्द्र

ISBN 978-81-89587-48-2

पुनःमुद्रणः वर्ष 2011

पर्यावरण शिक्षण केन्द्र (सी.ई.ई.) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समर्थित पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत एक उत्कृष्ट राष्ट्रीय संस्था है, जो नेहरू विकास प्रतिष्ठान से संबद्ध है। सी.ई.ई. का मुख्य उद्देश्य बच्चों, युवाओं, निर्णयकर्ताओं एवं सामान्य जन समुदाय को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है। सी.ई.ई. द्वारा ऐसे नवीन कार्यक्रमों, सामग्रियों तथा मॉडलों का विकास किया जाता है जो स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप अपनाये जा सकते हों।

नेशनल ग्रीन कोर जिसे एन.जी.सी. के नाम से भी जाना जाता है, भारत सरकार के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रारम्भ किया गया एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें स्कूली बच्चे पृथ्वी संरक्षण अभियान के संचालक के रूप में कार्य करते हैं। वर्ष 2001–2002 में शुरू हुए इस एन.जी.सी. कार्यक्रम में 1,10,000 से भी ज्यादा स्कूल, अधिकाधिक शिक्षक व 33 लाख से भी ज्यादा छात्र संरक्षण प्रयासों में शामिल हैं।

विषय सूची

आमुख i
संदेश ii
प्राक्कथन iii
एप्को के बारे मे v
दिशा **के बारे में** vi

जल 1
एक परिचय

- जल अनिवार्य है 2
  - जल और मैं
  - हम सभी के लिए जल आवश्यक है
- जल के स्रोत 4
  - हमारे लिए कितना जल?
  - जल कहाँ से आता है?
- जल का प्रयोग 7
  - जल का उपयोग
  - कौन बड़ा है?
- जल एवं संस्कृति 10
- जल की गुणवत्ता 11
  - बिन्दु या बिन्दुहीन?
  - जल खलनायक
  - डिटर्जेन्ट एवं जल प्रदूषण
- जल एवं स्वास्थ्य 15
  - स्वास्थ्य ऑडिट
- बाढ़ एवं सूखा 16
- जल संरक्षण 17
  - बूँद–बूँद महत्वपूर्ण
  - समझदार बनें!
  - साधारण उपाय
  - वर्षाजल संचयन
- जल और जेन्डर 21
  - जल और महिलाएं– एक संबंध
  - जल की एक बाल्टी
- **परियोजना** 22

जैवविविधता 25
एक परिचय

- जैवविविधता क्या है? 27
  - जैवविविधता सर्वेक्षण
  - वृक्ष का अवलोकन
  - पर्यावास के निवासी
  - हमारी संस्कृति मे चावल
- जैवविविधता का महत्व 32
  - प्रकृति एक प्रेरणा स्रोत
  - पादप सेवाएं
  - पौधों से औषधि
- जैवविविधता पर खतरे 36
  - भूमि उपयोग का सर्वेक्षण
  - खतरे में जैवविविधता
- जैवविविधता का संरक्षण 40
  - अनोखा सामंजस्य
- परियोजना **46**
  - जैवविविधता रजिस्टर

ऊर्जा **50**
एक परिचय

- ऊर्जा के विभिन्न उपयोग 51
  - हमारे जीवन में ऊर्जा
- ऊर्जा स्रोतों का वर्गीकरण 53
  - ऊर्जा खोजी
- ऊर्जा के विभिन्न स्रोत 55
  - मैं कौन हूँ?
  - आओ ऊर्जा को जाने!
  - स्वयंवर
- ऊर्जा का संरक्षण 62
  - बिजली के बिल की गणना
  - वॉट दर निर्धारण
  - लाइट बल्ब का चयन
  - ऊर्जा ऑडिट
  - ऊर्जा आदतें
  - साधारण उपाय
  - एक बॉक्स से सौर कूकर
- **परियोजना** **72**
  - बिजली बचायें

विषय सूची

अपशिष्ट एवं उसका प्रबंधन एक परिचय 76

- ठोस अपशिष्ट क्या है? 77
  - अपशिष्ट जासूस
- अपशिष्ट के प्रकार 79
  - मुझे पहचानों
  - अनचाही पैकेजिंग
  - प्रयोग करो और फेंको
  - जीवनकाल
- अपशिष्ट एक समस्या क्यों है? 83
  - अपशिष्ट कहाँ जाता है?
- अपशिष्ट का निस्तारण 85
- अपशिष्ट का प्रबंधन 86
  - कम्पोस्ट गड्ढा
  - अपशिष्ट और शिल्पकला
- सफाई क्यों? 90
  - जहाँ चाह वहाँ राह
  - कूड़े पर नाटक
- **परियोजना** 94
  - स्वच्छ रखें

सन्दर्भ

इस पुस्तिका में उद्धृत गतिविधियां सी.ई.ई. के निम्नलिखित प्रकाशनों से ली गयी हैं:

1. बिल्डिंग ब्लॉक, फ्रॉम इन्वायरनमेन्टल अवेयरनेस टू एक्शनः शिक्षक संदर्शिका, मीना रघुनाथन द्वारा संपादित, सी.ई.ई., 2003।
2. कन्सर्विंग अवर वॉटर रिसोर्सेसः हैन्डबुक ऑफ इन्वायरनमेन्टल एजुकेशन एक्टिविटीज़ फॉर टीचर्स, सी.ई.ई., 1998।
3. एनर्जी मैटर्सः ए स्कूल एनर्जी एजुकेशन गाइड, मीना रघुनाथन द्वारा संपादित, सी.ई.ई., 2000।
4. एनर्जीः ए टीचर्स मैनुअल, इन्वायरोस्कोप सिरीज़, किरन बी. छोकर द्वारा संपादित, सी.ई.ई. एवं वर्ल्ड रिर्सोसेज़ इन्स्टीट्यूट, ऑक्सफोर्ड एन्ड आई.बी.एच. प्रकाशक, नई दिल्ली, 2000।
5. इन्वायरनमेन्टल एजुकेशन हैन्डबुकः टीचर्स रिसोर्स, ममता पंड्या द्वारा संपादित, सी.ई.ई., 2005।
6. इन्वायरोस्कोप बायोडाईवर्सिटी, इन्वायरोस्कोप सिरीज़, किरन बी. छोकर द्वारा संपादित, सी.ई.ई. एवं वर्ल्ड रिर्सोसेज़ इन्स्टीट्यूट, ऑक्सफोर्ड एन्ड आई.बी.एच. प्रकाशक, नई दिल्ली, 1996।
7. एक्सप्लोरिंग ए ट्रीः शिक्षक संदर्शिका, सी.ई.ई., 1993।
8. बाढ़ एवं सूखाः शैक्षणिक सामग्री, सी.ई.ई, 1987।
9. फॉरेस्ट टेल्स, दक्षिण एशिया सहभागी पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम हेतु सी.ई.ई. द्वारा प्रकाशित, मीना रघुनाथन, ममता पंड्या, 1994।
10. गारबेज टू गार्डेन्सः ऐन एक्टिविटी बुकलेट ऑन सॉलिड वेस्ट मैनेजमेन्ट फॉर स्कूल्स, सी.ई.ई.–साउथ, 1999।
11. हरे भरे भविष्य की ओरः पर्यावरणीय परियोजनाओं के नियोजन एवं प्रबंधन हेतु पुस्तिका; मीना रघुनाथन, मंमता पंड्या द्वारा संपादित, सी.ई.ई., 1997।
12. ग्रीन गेम्स, मीना रघुनाथन, कल्याणी कन्दुला, सी.ई.ई., 1997।
13. द ग्रीन टीचरः आइडियाज़, एक्सपीरियंस एन्ड लर्निंग इन एजुकेशन फॉर दी इन्वायरनमेन्ट, मीना रघुनाथन द्वारा संपादित, सी.ई.ई., 1997।
14. सीखने का आनन्द– तृतीय, कक्षा 9 से 11, सी.ई.ई., वी.ए.एस.सी.एस.सी., 2005।
15. पजलिंग आउट पॉल्यूशन, दक्षिण एशिया सहभागी पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम हेतु सी.ई.ई. द्वारा प्रकाशित, मीना रघुनाथन, ममता पंड्या, 1995।
16. ए ट्रिप विद ड्रिप, यूनेप टुन्ज़ा पब्लिकेशन सिरीज़, सी.ई.ई., यूनेप, 2005।
17. सीखने का आनन्दः कक्षा 6 से 8 हेतु, सी.ई.ई।

आमुख

आर. मेहता
सलाहकार (पर्यावरण शिक्षा)
पर्यावरण एवं वन मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

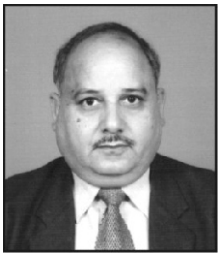

नेशनल ग्रीन कोर (एन.जी.सी.) कार्यक्रम, जिसकी शुरूआत वर्ष 2001–02 में हुई, अब देश के विद्यालयों में ख्याति प्राप्त एवं सफलतम कार्यक्रम बन चुका है। इस कार्यक्रम के तहत् देश के 1,10,000 से भी अधिक स्कूलों एवं लगभग 33 लाख छात्रों को स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक बनाने के साथ–साथ उन्हें समस्याओं को सुलझाने संबंधी कार्यवाहियों को क्रियान्वित करने हेतु प्रेरित किया जाता है। अब जबकि जलवायु परिवर्तन की समस्या एक बहुत बड़ा खतरा बन गयी है, हमें अपनी जीवनशैली को सुधारने की आवश्यकता है जिससे हम सब सतत् रूप से जीवन जीने में सफल हो सकें।

वर्ष 2005–14 तक के दशक को संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत् विकास हेतु शिक्षा के दशक के रूप में घोषित किया गया है। इस दशक का प्रमुख लक्ष्य, शिक्षा एवं सीखने के सभी पहलुओं में सतत् विकास के सिद्धान्तों, मूल्यों एवं तरीकों का एकीकरण करना है। ये शैक्षिक प्रयास व्यवहारों में परिवर्तन लाएंगे, जोकि पर्यावरणीय एकरूपता, आर्थिक समग्रता एवं वर्तमान व भावी पीढ़ियों हेतु न्यायसंगत समाज के निर्माण के संदर्भ में एक बेहतर एवं सतत् भविष्य का निर्माण करेगा। चूँकि ये सभी प्रयास समस्याओं के सृजनात्मक हलों को ढूंढने पर केन्द्रित है इसलिए एन.जी.सी. कार्यक्रम अपने विस्तार एवं गतिविधि आधारित कार्यवाहियों के साथ, इन सभी प्रयासों को कार्यक्रम में भली–भांति समाहित कर सकता है।

पर्यावरण शिक्षण केन्द्र, अहमदाबाद द्वारा विकसित एवं एन.जी.सी. कार्यक्रम हेतु रूपान्तरित यह प्रकाशन नेशनल ग्रीन कोर कार्यक्रम से संबंधित नोडल एजेन्सियों एवं रिसोर्स एजेन्सियों के लिए ''सतत् विकास हेतु शिक्षा'' पर काफी सहायक हो सकता है। इस पुस्तिका को ज्यादा से ज्यादा से लोगों तक पहुँचने के उद्देश्य से इसका हिन्दी संस्करण पर्यावरण शिक्षण केन्द्र, लखनऊ द्वारा तैयार किया गया है। इस पुस्तिका में पर्यावरणीय, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों का स्पष्ट वर्णन है। हमें आशा है कि यह पुस्तिका एन.जी.सी. कार्यक्रम संचालकों को शिक्षकों को प्रशिक्षित करने एवं इस संदर्भ में उनकी गतिविधियों का मूल्यांकन करने में सहायक होगी।

आर. मेहता

जुलाई 2009

संदेश

प्रवीण गर्ग
कार्यपालन निदेशक
पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को),
भोपाल, मध्यप्रदेश
भारत

पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को), आवास एवं पर्यावरण विभाग, मध्यप्रदेश शासन की प्रमुख सलाहकारी संस्था है। वर्ष 1981 में स्थापित इस संस्था की पर्यावरणीय शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान है। संगठन के उद्देश्यों एवं कार्यक्षेत्र के अनुभव को देखते हुए ही मध्यप्रदेश शासन द्वारा एप्को को भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय हरित कोर (एन.जी.सी.) योजना के लिए राज्य की नोडल एजेन्सी के रूप में वर्ष 2001 में नामित किया गया। पर्यावरण शिक्षण केन्द्र (सी.ई.ई.), राष्ट्रीय हरित कोर (एन.जी.सी.) योजना के लिए मध्यप्रदेश राज्य की रिसोर्स एजेन्सी के रूप में वर्ष 2001 से कार्य कर रही है। तभी से राज्य में इस योजना का सतत् रूप से सफल क्रियान्वयन किया जा रहा है।

एन.जी.सी. की राज्य नोडल एजेन्सी के रूप में एप्को द्वारा मध्यप्रदेश के प्रत्येक जिले के 250 विद्यालयों में ईको–क्लबों का गठन किया गया है। इस प्रकार से पूरे प्रदेश में 12500 विद्यालयों में ईको–क्लब स्थापित हैं।

विद्यालयों में ईको–क्लब की गतिविधियों का संचालन ईको–क्लब प्रभारी शिक्षकों के मार्गदर्शन में किया जाता है। ईको–क्लब प्रभारी शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में बच्चों को पर्यावरण संबंधी गतिविधियों के संचालन एवं मार्गदर्शन में **'दिशा'** पुस्तिका के अंर्तगत् समाहित विषय सामग्री महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करेगी।

आशा है कि ईको–क्लब विद्यालय **'दिशा'** पुस्तिका की विषय सामग्री का उपयोग कर पर्यावरण संवर्धन में अपना विशेष योगदान देंगे।

शुभकामनाओं सहित।

जनवरी 2011

प्रवीण गर्ग

प्राक्कथन

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2005 से 2014 तक के दशक को टिकाऊ विकास हेतु शिक्षा का दशक (डिकेड ऑफ एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट– डी.ई.एस.डी.) घोषित किया है।

इस दशक में एक ऐसे विश्व की संकल्पना की गयी है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा से लाभ प्राप्त करने के साथ–साथ सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन एवं टिकाऊ विकास हेतु आवश्यक मूल्यों, व्यवहारों एवं जीवनशैलियों से संबंधित ज्ञानार्जन करने के अवसर भी मौजूद हों।

शिक्षा व्यवस्था के सभी स्तरों पर टिकाऊ विकास की समझ को शामिल करते हुए शैक्षणिक कार्यक्रमों, नीतियों एवं प्रक्रियाओं को दिशा प्रदान करना, डी.ई.एस.डी. के प्रमुख लक्ष्यों में से एक है जिससे शिक्षा, समाज के सभी सदस्यों की क्षमता विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए टिकाऊ भविष्य हेतु लोगों को मिलजुल कर कार्य करने हेतु प्रेरित कर सके।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के नेशनल ग्रीन कोर (एन.जी.सी.) कार्यक्रम के तहत् संचालित गतिविधियों में, टिकाऊ विकास के परिप्रेक्ष्यों को सम्मिलित करते हुए टिकाऊ विकास हेतु शिक्षा (एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट–ई.एस.डी.) को जोड़ा जा सकता है।

टिकाऊ विकास के परिप्रेक्ष्यों को अपनी गतिविधियों में सम्मिलित करने की योजना बनाने से पूर्व यह अत्यन्त आवश्यक है कि इसकी अवधारणाओं को भलीभांति समझ लिया जाए। ब्रून्टलैण्ड आयोग के अनुसार,

''टिकाऊ विकास एक ऐसा विकास है, जो भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं में हस्तक्षेप किए बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करने पर बल देता है।'' (वर्ल्ड कमीशन ऑन इन्वायरनमेन्ट एण्ड डेवलपमेन्ट, 1987)

टिकाऊ विकास के अन्तर्गत तीन प्रमुख क्षेत्र सम्मिलित हैंः समाज, पर्यावरण एवं अर्थव्यवस्था। संस्कृति एवं मूल्य इन तीन आयामों को घेरे हुए है।

समाजः सामाजिक परिवर्तन एवं विकास के साथ–साथ लोकतांत्रिक एवं सहभागिता आधारित प्रणाली में, सहायक सामाजिक संस्थाओं एवं उनकी भूमिकाओं की समझ अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इन्हीं के माध्यम से लोगों को अपने विचारों को व्यक्त करने, सरकारों को चुनने, सहमतियों को दर्शाने एवं असमानताओं को दूर करने के अवसर प्राप्त होंगे।

पर्यावरणः पृथ्वी के संसाधनों पर हमारी निर्भरता, भौतिक पर्यावरण की अस्थिरता एवं मानवीय गतिविधियों तथा निर्णयों के इन पर पड़ने वाले प्रभावों से संबंधित जागरुकता के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक नीतियों के क्रियान्वयन में पर्यावरणीय सरोकारों को जोड़ने की वचनबद्धता भी अत्यन्त आवश्यक है।

अर्थव्यवस्थाः आर्थिक वृद्धि की सीमा एवं क्षमता तथा पर्यावरण व समाज पर इसके द्वारा पड़ रहे प्रभावों के प्रति संवेदनशील होने के साथ–साथ पर्यावरण एवं सामाजिक न्याय से संबंधित सरोकारों को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत और समाज स्तरीय उपभोग की दर के आंकलन के प्रति वचनबद्ध भी होना चाहिए।

इस प्रकार से इन तीन अवयवों– पर्यावरण, समाज एवं अर्थव्यवस्था– का हित एक दूसरे पर निर्भर है जिसमें से किसी को भी अलग नहीं किया जा सकता है। टिकाऊपन अर्थात् एक ऐसा भविष्य जहाँ विकास एवं जीवन की गुणवत्ता में सुधार के साथ–साथ पर्यावरणीय, सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं को भी ध्यान में रखा जाता है। एक स्वस्थ एवं समृद्ध समाज को, समाज के सभी लोगों हेतु समाज के सभी अंगों द्वारा एक शान्तिपूर्ण पर्यावरण की आवश्यकता होती है, ताकि लोगों को एक सुखद एवं समृद्ध जीवन प्राप्त हो।

ई.एस.डी. मुख्य रूप से लोगों के जीवन मूल्यों से संबंधित है, जिसमें लोगों के प्रति आदरभाव अंर्तनिहित है जिसके अंर्तगत वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों के लिए भिन्नता एवं विविधता, पर्यावरण एवं पृथ्वी पर उपलब्ध संसाधनों के प्रति सम्मान की भावना को सम्मिलित किया गया है। शिक्षा हमें, स्वयं को, दूसरों को और हमारे वृहद प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण से संबंधों को समझने के योग्य बनाती है और यह समझ ही हमें आदरभाव को विकसित करने में मदद करती है। भारत के सन्दर्भ में, जहाँ पर विश्व की कुल जनसंख्या का लगभग 1/6 हिस्सा निवास करती है, जिसमें उनकी अलग–अलग धार्मिक मान्यताएं, बोली और भाषाएं, सामाजिक तंत्र, संस्कृतियां एवं परंपराएं आदि के विविध रूप देखने को मिलते हैं, टिकाऊपन का अर्थ इन सभी विविधताओं को एक सूत्र में बाँधना है। यह, सांस्कृतिक विशिष्टता के समांगीकरण को देखने के बजाय, इन विविधताओं का आदर एवं उत्सव मनाने के बारे में है।

ई.एस.डी. का प्रमुख लक्ष्य; उत्तरदायित्व, आदरभाव, अन्वेषण एवं वार्तालाप/आवाज उठाने के प्रति संवेदनशील करने के साथ–साथ ऐसे व्यवहारों एवं प्रक्रियाओं को अपनाने के प्रति जागरूक करना है जिससे हम सभी, आधारभूत आवश्यकताओं को प्रभावित किए बिना, सम्पूर्ण जीवन जीने के योग्य बन जायें।

ई.एस.डी. निम्नलिखित विशेषताओं को प्रदर्शित करते हुए उच्च गुणवत्तापरक शिक्षा संबंधी सरोकारों को परिलक्षित करता है।

अर्न्तविषयक तथा संपूर्णता के साथः टिकाऊ विकास हेतु शिक्षण एक अलग विषय न होकर सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में निहित है;

मूल्यों पर आधारितः टिकाऊ विकास के लिए मूल्यों एवं सिद्धान्तों का आदान–प्रदान;

निर्णायक सोच एवं समस्या समाधानः टिकाऊ विकास की चुनौतियों व निर्णयों को न ले पाने की स्थितियों से निपटने हेतु दृढ़ सोच तैयार करना;

सहभागी तथा निर्णयपरकः सीखने वाले स्वयं को क्या सीखना है इसका निर्णय लेने हेतु भाग लेते हैं;

स्थान विषयकः सीखने वालों द्वारा प्रयुक्त भाषा में स्थानीय एवं भौगोलिक मुद्दों की चर्चा करना।

बहुत सी विधियाँः सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने हेतु विभिन्न विधियों (शब्द, कला, नाटक, वाद–विवाद, अनुभव....इत्यादि) का उपयोग करना।

एन.जी.सी. कार्यक्रम, देश के 1,10,000 से भी अधिक स्कूलों के ईको–क्लबों द्वारा संचालित पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर रहा है। इसलिए इस कार्यक्रम के तहत् टिकाऊ विकास एवं ई.एस.डी. संबंधी वैश्विक समझ में निहित पहलुओं एवं परिप्रेक्ष्यों को स्वीकार किया जा सकता है। कार्यक्रम की कार्यविधि एवं गतिविधियों की प्रकृति पहले से ही सीखने के एकीकृत एवं बहुविषयक तरीकों पर आधारित है एवं साथ ही यह सोच भी है कि यही तरीका ''परिवर्तन'' ला सकता है। एन.जी.सी. कार्यक्रम द्वारा प्रदान किए गए सीखने के अवसरों को ऐसी गतिविधियों/परियोजनाओं द्वारा समृद्ध बनाया जा सकता है, जो ई.एस.डी. की प्रमुख विशेषताओं की नींव पर आधारित हो तथा इनसे प्राप्त निष्कर्षों/परिणामों में टिकाऊ विकास के परिप्रेक्ष्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित हों। यदि इन गतिविधियों के विस्तार की बात करें तो एन.जी.सी. कार्यक्रम पूरे देश में विभिन्न स्कूलों में संचालित होता है, इसलिए यह कार्यक्रम देश की शिक्षण परिस्थिति को वृहद रूप से प्रभावित कर सकता है।

पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को) के बारे में

मध्यप्रदेश के आवास एवं पर्यावरण विभाग द्वारा पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को) की स्थापना पर्यावरण के क्षेत्र में राज्य सरकार की परामर्श संस्था के रूप में 5 जून 1981 को की गई। एप्को सोसायटी अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत संस्था है। राज्य शासन से संस्था को विभिन्न योजनाओं के लिये अनुदान प्राप्त होता है तथा आवास एवं पर्यावरण विभाग के अंतर्गत पर्यावरण नीति के क्रियान्वयन मे संस्था एक परामर्शी की भूमिका निभाती है।

भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित राष्ट्रीय हरित कोर (एन. जी. सी.) योजना मध्यप्रदेश के सभी जिलों में वर्ष 2001 से स्थापित की गई है तभी से पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन को राज्य शासन द्वारा एन. जी. सी. की नोडल संस्था घोषित किया गया है।

इस योजना के क्रियान्वयन का मुख्य उददेश्य स्कूली बच्चों में पर्यावरण के प्रति चेतना एवं संवेदनशीलता जागृत करना है। साथ ही पर्यावरण एवं पर्यावरणीय समास्याओं के प्रति बच्चों में समझ विकसित करते हुए पर्यावरणीय शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना है।

राज्य नोडल संस्था के रूप में एप्को का कार्य प्रशिक्षण का आयोजन, जिला समिति के माध्यम से कार्यक्रम का संचालन, राज्य सतर पर कार्यक्रमों का आयोजन, प्रचार अभियान, राज्य समिति की बैठकों का आयोजन एवं राज्य में एन. जी. सी. कार्यक्रम का सम्पूर्ण संचालन करना है।

संपर्क सूत्रः

पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को)

कार्यपालन संचालक

पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन
पर्यावरण परिसर, ई–5, अरेरा कालोनी,
भोपाल– 462016 फोनः 0755 – 2466970, 2464318
फैक्सः 0755 – 2462136
ई–मेलः epcobpl@sancharnet.in
वेबसाइट: www. epco.in

पर्यावरण शिक्षण केन्द्र (सी.ई.ई.):

पर्यावरण शिक्षण केन्द्र
मध्यप्रदेश राज्य कार्यालय
बी–11, चाणक्यपुरी, चूना भट्टी,
कोलार रोड,
भोपाल – 462016
फोनः 0755 – 6537682
फैक्सः 0755 – 2420295
ई–मेलः ceemadhyapradesh @ceeindia.org
वेबसाइट: www. ceeindia.org

दिशा के बारे में

आज के समय में जब पूरे विश्व ने शिक्षा एवं ज्ञानार्जन संबंधी समस्त प्रयासों को टिकाऊ विकास की ओर अभिमुख करने की आवश्यकता को स्वीकारा है, तो ऐसे में छात्रों/बच्चों को ऐसी जानकारी एवं कौशल प्रदान करने की आवश्यकता है जो उन्हें सकारात्मक कार्यवाही करने के लिए प्रेरित करें। यद्यपि कार्यवाही आधारित पाठ्यचर्या को औपचारिक कक्षा कक्ष में शामिल किया जाना असंभव सा लगता है, परन्तु ईको–क्लब कार्यक्रमों में इन गतिविधियों को शामिल करने हेतु पर्याप्त अवसर मौजूद हैं, जिससे कि भावी पीढ़ियों को जागरूक बनाया जा सके।

बाल भवन द्वारा पूरे भारत में क्रियान्वित कार्यक्रमों एवं पहलों द्वारा, बच्चे पर्यावरण एवं विकास संबंधी मुद्दों पर विशेष रूप से ध्यान देने के साथ समस्याओं के हल ढूँढने व कार्यवाही करने संबंधी उत्तरदायित्वों को निभाने का कार्य भी भली–भांति कर पायेंगें।

यह पुस्तिका बच्चों के लिए सूचना एकत्र करने, अपने आस–पास के पर्यावरणीय मुद्दों के आकलन में, कार्यवाहियों के निर्धारण के साथ–साथ उन्हें संचालित करने में सहायक होगी। पूरे देश में संचालित एन.जी.सी. कार्यक्रम के अन्तर्गत स्कूल स्वयं करके सीखने पर आधारित शिक्षण पद्धति को लागू करने का कार्य प्रारम्भ कर चुके हैं। साथ ही ईको–क्लब यहाँ दी गई गतिविधियों को अपने आस–पास के मुद्दों पर कार्य करने के लिए प्रयोग कर पायेंगे।

सही मायने में, इस पुस्तक का लक्ष्य शिक्षा को टिकाऊ विकास हेतु शिक्षा की ओर अभिमुख करने संबंधी आवश्यक जानकारियों को प्रदान करना है।

उद्देश्य

- बच्चों को वास्तविक दुनिया से संबंधित मुद्दों पर ध्यानाकर्षित करते हुए उन्हें टिकाऊ विकास के बारे में जागरूक बनाना;
- मुद्दों से संबंधित आवश्यक प्रेक्षणों, आकलनों, खोजों एवं उनके समाधानों के लिए आवश्यक ज्ञान एवं कौशल का विकास करना;

  उन्हें सहपाठियों, माता–पिता एवं समुदायों के साथ अपने ज्ञान को बाँटने व संचारित करने हेतु प्रोत्साहित करना;
- अन्य लोगों को भी कार्यवाहियों हेतु प्रेरित करना;
- कार्यवाही को संचालित करने हेतु जागरूक करना।

रूपरेखा

दिशा में पर्यावरण संबंधी 4 प्रमुख मुद्दों से संबंधित जानकारियाँ दी गयी हैं। इन सभी मुद्दों को इकाईयों के आधार पर बाँटा गया है:

1. जल
2. जैवविविधता
3. ऊर्जा
4. अपशिष्ट एवं अपशिष्ट प्रबंधन

प्रत्येक मुद्दे को, परिचय, सूचना/जानकारी, गतिविधि संबंधी निर्देश, गतिविधि सुझाव, परियोजना के नियोजन के आधार पर विस्तार से बताया गया है।

प्रत्येक इकाई के आरम्भ में दिया गया परिचय, उस विषय से संबंधित पहलुओं एवं मुद्दों के बारे में बताता है।

आरम्भ करने से पहले, इसके अर्न्तगत विषय से संबंधित विभिन्न पहलुओं के बारे में आवश्यक सूचनायें प्रदान की गयी हैं।

इकाई में दी गयी गतिविधियाँ, बच्चों को ''स्वयं करके सीखने'' की पद्धति द्वारा, इन पहलुओं से संबंधित खोज करने के प्रति प्रेरित करती हैं। प्रत्येक गतिविधि के अर्न्तगत एक सूची है, जिसमें आवश्यक सामग्री, अवधि, तरीका एवं उद्देश्य सम्मिलित है। इकाई में दी गयी परियोजना, विषय आधारित कार्यवाही परियोजना के नियोजन व क्रियान्वयन में सहायक होगी।

हम आशा करते हैं कि '*दिशा*', टिकाऊ विकास संबंधी कार्यवाहियों को करने हेतु प्रेरित करेगी।

दिशा » विषय » परिचय » जानकारी » गतिविधियां » कार्यवाही

नेशनल ग्रीन कोर कार्यक्रम में शामिल इको क्लब ऐसी
जागरूकता का प्रसार करते हैं जो विकास के संदर्भ में भविष्य
की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता से
समझौता किये बगैर वर्तमान पीढ़ी की
आवश्कताओं को पूरा कर सकें।